هندي

इस्लाम का परिचय और उसकी खूबियाँ

लेखक :
शैख इब्ने बाज़ रहेमहुल्लाह

التعريف بالإسلام ومحاسنه

تأليف سماحة الشيخ/
عبدالعزيز بن عبدالله بن باز
- رحمه الله -

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بسلطانة
تحت إشراف وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

سلطانة
Sultanah

الهندية

المملكة العربية السعودية

ارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

فرع القصيم

التعريف بالإسلام ومحاسنه

تأليف سماحة الشيخ

عبدالعزيز بن عبدالله بن باز

ترجمة: عبد السلام قمرالدين الرحماني

مراجعة: أبو حماد عطاء الرحمن النيبالي

इस्लाम का परिचय और उसकी खूबियाँ

लेखक

शैख इब्ने बाज़ रहेमहुल्लाह

अनुवाद

अब्दुस्सलाम कमरुद्दीन अल रहमानी

संशोधक

अबू हम्माद अताउर रहमान नेपाली

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالصفراء ببريدة

سنترال : ٣٨٣٠٠٧٢-٣٨٢٦٦١١- فاكس: ٣٨٢١٦٢٠

ص ب ٨٧٧ الرمز البريدي: ٥١٤٢١

E-mail: jaliatsafra@yahoo.com

التعريف بالإسلام ومحاسنه

ترجمه إلى الهندية : عبدالسلام قمرالدين الرحماني

الطبعة الأولى: ١٤٢٩هـ

ح مكتب الدعوة والإرشاد بالصفراء ببريدة ، ١٤٢٩ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

مكتب الدعوة والإرشاد بالصفراء ببريدة

التعريف بالإسلام ومحاسنه هندي. / مكتب الدعوة والإرشاد بالصفراء ببريدة - بريدة ، ١٤٢٩هـ

٢٨ ص ؛ ١٢ × ١٧ سم

ردمك : ١-٠١-٨٠٢٧-٦٠٣-٩٧٨

١- الإسلام - مبادىء عامة أ- العنوان

ديوي ٢١٠ ١٤٢٩/٣٧٨٠

رقم الايداع: ١٤٢٩/٣٧٨٠

ردمك: ١-٠١-٨٠٢٧-٦٠٣-٩٧٨

تشرف بطباعة هذا الكتاب

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالصفراء ببريدة

وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

ص.ب ٨٧٧ الرمز البريدي ٥١٤٢١

القصيم بريدة - هاتف ٠٦ ٣٨٣٠٠٧٢ - فاكس ٠٦ ٣٨٢١٦٢٠

للمشاركة في أعمال الدعوة

حساب الزكاة ١٩٢٦٠٨٠١٠٠٠٢٢٢٦ مصرف الراجحي

حساب المكتب ١٦٢٦٠٨٠١٠٠٦٠٠٠٦ مصرف الراجحي

الصف والإخراج: المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالصفراء ببريدة

सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, दरूद और सलाम नाजलि हो उसके नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर। अल्लाह तआला ने कुर्आन में फरमायाः

{الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِيناً} المائدة: ٣

((आज मैंने तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए परिपूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया है)) कुर्आन की एक दूसरी जगह अल्लाह फरमाते हैं

{إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللّهِ الإِسْلاَمُ} آل عمران:١٩

((अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है)) कुर्आन में अल्लाह का यह भी फरमान है :

{وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلاَمِ دِيناً فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ} آل عمران:٨٥

((इस्लाम के सिवा जो व्यक्ति कोई ओर प्रणाली अपनाना चाहे उसकी प्रणाली कदापि स्वीकार न की जायेगी और परलोक में वह असफल रहेगा))।

तौहीद के आस्था के साथ अल्लाह के समक्ष आत्मा संपर्ण करदेना और उसी की भक्ति करना तथा शिर्क और उसके समूह से दूर होने के धारना को इस्लाम कहा जाता है। श्रीमान मोहम्द सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आने से पहले अरब वासियों का आस्था भी शिर्क था जैसा की इमाम बुखारी ने हजरत अबु रजा अल अतारदी रजियल्लाहो अन्हो से यह हदीस रवायत किया है।

" كنا نعبد الحجر فإذا وجدنا حجراً هو خير منه ألقيناه وأخذنا الآخر فإذا لم نجد حجرا جمعنا حثوة من تراب ثم جئنا بالشاة فحلبنا عليه ثم طفنا به "

((हम लोग पत्थरों की पूजा करते थे यदि जब उस से उत्तम पथ्थर पाते थे तो पहले पत्थर को फेंक कर दूसरे पथ्थर को ले लेते और अगर कोई पत्थर ना मिलता तो मिट्टी जमा करके उस पर बकरी का दूध दुह देते, और उसका परिकर्मा करते थे))।

नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आमंत्रण से पहले अरब बासियों के अलावह और समुदायों कि इस्तिथी कैसी थी इस बारे में कुर्आन की बहुत सी जगहों में बयान हुआ है, जैसा कि अल्लाह का यह शुभ कथन है

{وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لاَ يَضُرُّهُمْ وَلاَ يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَـؤُلاء شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ} يونس:١٨

((ये लोग अल्लाह के सिवा उसे पूज रहे हैं जो इन को न हानि पुहँचा सकते हैं और न लाभ, और कहते यह हैं कि येह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं))।

अल्लाह ने यह भी फरमाया है:

{وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاء مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَى} الزمر:٣

((वे लोग जिन्हों ने अल्लाह के सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं (और अपने इस कर्म का कारण यह बताते हैं कि) हम तो उनकी उपासना केवल इसलिए करते हैं कि वे अल्लाह तक हमारी पहुँच करा दें))। और अल्लाह का यह फरमान है :

{إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاء لِلَّذِينَ لاَ يُؤْمِنُونَ * وَإِذَا فَعَلُواْ فَاحِشَةً قَالُواْ وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءنَا وَاللّهُ أَمَرَنَا بِهَا قُلْ إِنَّ اللّهَ لاَ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاء أَتَقُولُونَ عَلَى اللّهِ مَا لاَ تَعْلَمُونَ * قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُواْ وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ} الأعراف:٢٧/٢٨/٢٩

((इन शैतानों को हमने उन लोगों का सरपरस्त बना दिया है जो अल्लाह को मानते नहीं। ये लोग जब कोई अश्लील काम करते हैं तो कहते हैं हम ने अपने बाप दादा को इसी तरीके पर पाया है और अल्लाह ही ने हमें ऐसा करने का आदेश दिया है। इन से कहो, अल्लाह अशलीलता का आदेश कभी नहीं दिया करता, क्या तुम अल्लाह का नाम लेकर वे बातें कहते हो जिन के विषय में तुम्हें ज्ञान नहीं है? हे नबी, इन से कहो मेरे प्रभु ने तो सत्य और न्याय का आदेश दिया है, और उसका आदेश तो यह है कि प्रत्येक उपासना में अपना रुख ठीक रखो, और उसी को पुकारो अपने धर्म को उसके लिए विशिष्ट करके। जिस प्रकार उसने तुम्हे अब पैदा किया है उसी प्रकार तुम फिर पैदा किए जाओगे))। अल्लाह के इस फरमान तक

{فَرِيقاً هَدَى وَفَرِيقاً حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلاَلَةُ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاء مِن دُونِ اللّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ} الأعراف:٣٠

((एक गरोह को तो उसने सीधा मार्ग दिखा दिया है, मगर दूसरे गरोह पर गुमराही चिपक कर रह गयी है, क्योंकि उन्होंने अल्लाह के स्थान पर शैतान को अपना सरपरस्त बना लिया है और वे समझ रहे हैं कि हम सीधे मार्ग पर हैं))। और अल्लाह ने यह भी फरमाया है :

{وَجَعَلُواْ لِلّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالأَنْعَامِ نَصِيباً فَقَالُواْ هَـذَا لِلّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَـذَا لِشُرَكَآئِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلاَ يَصِلُ إِلَى اللّهِ وَمَا كَانَ لِلّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَى شُرَكَآئِهِمْ سَاء مَا يَحْكُمُونَ} الأنعام١٣٦

((इन लोगों ने अल्लाह के लिये स्वयं उसी की पैदा की हुयी खेतियों और चौपायों में से एक भाग निश्चित किया है और अपने ख़याल से कहते हैं यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे ठहराये हुए साझीदारों के लिए। फिर जो भाग उनके ठहराये हुए साझीदारों के लिए है वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता मगर जो अल्लाह के लिए है वह उन के साझीदारों को पहंच जाता है। कैसे बुरे फैसले करते हैं यह लोग))।

नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हदीसों और मानवीय इतहिासकारवियों की तहरीरों से ज्ञाता होता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आने से पहले संसार में मनुष्य विभिन्न प्रकार के शिर्क में आधारित थे उन में से कोई मुर्ति पूजक, कोई कब्र पूजक, कोई सूर्य, चन्द्रमा एवम् तारे की पूजा करते थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें केवल अल्लाह की पूजा करने की तरफ आमन्त्रण दिये। और झूठे उपासीयों की पूजा छोड़ने का आदेश दिये, जैसा कि अल्लाह तआला ने कुर्आन में फरमाया है :

{قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعاً الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ لا إِلَـهَ إِلاَّ هُوَ يُحْيِـي وَيُمِيتُ فَآمِنُواْ بِاللّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ }الأعراف١٥٨

((हे नबी, कहो, हे मानव , मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का पैग़ाम्बर हूँ जो धरती और आकाशों के राज्य का मालिक है उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है, वही जीवन प्रदान करता है, और वही मृत्यु देता है, अतः मानो अल्लाह को और उसके भेजे हुए उम्मी नबी को जो अल्लाह और उस की बातों को मानता है और उसके अनुयायी बनो, आशा है कि तुम सीधा मार्ग पा लोगे))।

अल्लाह ने यह भी फरमाया है :

{كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ} إبراهيم: ١

((हे महम्मद, यह एक किताव है जिस को हम ने तुम्हारी ओर अवतरित किया है ताकि तुम लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश में लाओ, उनके प्रभु के दैवयोग से, उस इश्वर के मार्ग पर जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली और अपने आपमें प्रशंसनीय है))।

कुर्आन की एक और जगह में अल्लाह ने फरमाया :

{يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِداً وَمُبَشِّراً وَنَذِيراً * وَدَاعِياً إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجاً مُّنِيراً}

((हे नबी, हमने तुम्हें भेजा है गवाह बना कर, शुभ सूचना देने वाला, और डराने वाला बना कर अल्लाह की अनुमति से उसकी ओर निमंत्रण देने वाला बना कर और प्रकाशमान प्रदीद बनाकर))।

अल्लाह ने यह भी फरमाया है :

{وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاء} البينة: ٥

((और उनको इस के अतिरिक्त कोई आदेश नहीं दिया गया था कि अल्लाह की बन्दगी करैं, अपने धर्म को उसके लिए खालिस करके, बिलकुल एकाग्र हो कर))।
इसी तरह अल्लाह ने यह भी फरमाया :

{يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ} البقرة:٢١

((लोगो, बन्दगी करो, अपने उस प्रभुवर (रब) की जो तुम्हारा और तुम से पहले जो लोग हुए हैं उन सब का पैदा करने वाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी प्रकार हो सकती है))। कुर्आान में यह भी शुभ कथन है

{وَقَضَى رَبُّكَ أَلاَّ تَعْبُدُواْ إِلاَّ إِيَّاهُ} الإسراء:٢٣

((तेरे प्रभु ने निर्णय कर दिया है कि : तुम लोग किसी की बन्दगी ना करो, सेवाए उस के))।

अल्लाह नेउ न मुशरिकों के बारे में स्पष्ट किया है कि वह अपने शिर्क के बावजूद इस बात पे अकीदह रखते थे कि अल्लाह ही हमारा पालनकरता, जनमदाता है, और अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे उपासियों की इस लिए पूजा करते हैं क्योंकि वह हमारे और अल्लाह के बीच माध्यता हैं। अल्लाह ने फरमाया :

{وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللّهِ مَا لاَ يَضُرُّهُمْ وَلاَ يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَـؤُلاء شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللّهِ} يونس:١٨

((ये लोग अल्लाह के सिवा उसे पूज रहे हैं जो इन को न हानि पुहँचा सकते हैं और न लाभ, और कहते हैं कि वे अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं))। इसी तरह अल्लाह का यह फरमान भी है :

{قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللّهُ فَقُلْ أَفَلاَ تَتَّقُونَ }يونس: ٣١

((उन से पूछो, कौन तुम को आकाश और धरती से रोजी देता है ? ये सुनने और देखने की शक्तियां किसके अधिकार में है ? कौन निर्जीव में से सजीव को और सजीव में से निर्जीव को निकालता है ? कौन इस जगत-व्यवस्था का उपाय कर रहा है ? वे अवश्य कहेंगे कि अल्लाह । कहो, फिर (सत्य के विरुद्ध चलने से) परहेज क्यों नहीं करते)) । अल्लाह का यह भी फरमान हैः

{وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ }الزخرف ٨٧

((और अगर तुम इन से पूछो कि इन्हें किस ने पैदा किया है तो यह स्वयं कहेंगे कि अल्लाह ने । फिर कहाँ से ये धोखा खा रहे हैं)) ।

इस अर्थ में कुर्आन के बहुत से शलोक हैं, श्रीमान मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सम्पूर्ण संसार के व्यक्तियों के लिए अल्लाह का अन्तिम सदेंष्टा के रूप में आए ताकि समस्त मानवों को शिर्क तथा कुफर के अन्धकार से नीकाल कर ईमान और तौहीद के प्रकाश में चलायें । यह महान धर्म इस्लाम पाँच स्तम्भों पर क़ायम है, जैसा कि सहहि हदीस में हजरते इब्ने उमर रजियल्लाहो अन्होमा से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया :

"بني الإســـلام على خمس شهادة أن لا إله إلا الله وأن محمدا رسول الله و إقام الصلاة وإيتاء الزكاة وصوم رمضان وحج البيت "

((इस्लाम की जग पाँच स्म्भों पर आधारित है, इस बात की साक्षी देना कि अल्लाह के अतरिक्त कोई सच्चा उपास्य नहीं है, एवम् मोहम्द सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के संदेशवाहक और भक्त हैं, नमाज पढना, जकात देना, हज करना, रमजान महीना के ब्रत रखना))

पहिला स्तंभ

एकेश्वर्वाद पर आस्था रखना और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह का उपदेशक मानना, केवल जुबान से कहना काफी नहीं है बलकि इसके अर्थ और व्याख्या बमोजिब कार्य करना है, और सब सुर्कम को नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत के अनुसार अल्लाह के लिए विसिष्ट करना अनिर्वाय है, यह आस्था तकाजा करता है कि अल्लाह के साथ मोहब्बत और उस के उपदेशक मोहम्द सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मोहब्बत करना अनिवार्य है, और इस मोहब्बत का तकाजा यह है कि केवल अल्लाह की पूजा हो एवम नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सिद्धान्त पर कार्यरत हो।

जैसा की कुर्आन में अल्लाह तआला फरमाता है :

{قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ }آل عمران: ٣١

((हे नबी, लोगों से कह दो कि यदि तुम वास्त्व में अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करेगा और तुम्हारी खताओं को क्षमा कर देगा))।
ऐक और जगह में अल्लाह फरमाते हैं:

{وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا } الحشر:٧

((जो कुछ रसुल तुम्हें दे वह ले लो और जिस चीज से वह तुम को रोक दे उस से रुक जाओ))। नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया :

((ثلاث من كن فيه وجد بهن حلاوة الإيمان أن يكون الله ورسوله أحب إليه مما سواهما))

((जिस व्यक्ति में तीन चीज पाई जायें गोया उस ने ईमान का मीठास पा लिया, अल्लाह और उसके संदेष्टा संसार की सब चीजों से महबूब हो जायें)) और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का यह भी फरमान है :

" لا يؤمن أحدكم حتى أكون أحب إليه من والده وولده والناس أجمعين"

((तुम में से कोई वयक्ति पूर्ण रूप से ईमान वालाउस वक्त तक नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के निकट उसकी माँ और बाप और सन्तानों तथा समस्त वयक्तियों से महबूब ना हो जाउँ))।

दोसरा स्तंभ नमाज

लाइलाहा इल्लल्लाहु के स्वीकार के पश्चात नमाज क़ायम करना, क्योंकि यह इस्लाम धर्म का ऐक महत्पूर्ण स्तंभ है, और महाप्रलय के दिन लोगों का सबसे पहले हिसाब नमाज़ ही के बारे में होगा, यदि इस हिसाब में

सफलता प्राप्त हुआ तो और हिसाब व किताब में भी सफलता होगा, यदि इस में असफल हुआ तो सब नेकियाँ व्यर्थ हो जायेंगी, और मनुष्य नुक़सान में पडा रहेगा, नमाज़ को उसके मोकर्रर समय में बिलकुल आदर पूर्ण तरीका से पढना अनिवार्य है। अल्लाह ने कुर्आन में फरमायाः {إِنَّ الصَّلاَةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَاباً مَّوْقُوتاً} النساء١٠٣

((नमाज़ वास्त्व में ऐसा अनिवार्य कार्य है जो समय की पाबन्दी के साथ ईमान वालों के लिये आवश्यक किया गया है))। अल्लाह ने हमें नमाज की हिफाजत का आदेश दिया है : {حَافِظُواْ عَلَى الصَّلَوَاتِ والصَّلاَةِ الْوُسْطَى وَقُومُواْ لِلّهِ قَانِتِينَ } البقرة٢٣٨

((अपनी उपासनाओं (नमाजों) की चौकसी रखो, विशेष रूप से ऐसी उपासनाओं (नमाजों) की जो अपने में उपासना-गुणों को समाहित किये हुए हों। अल्लाह के आगे इस तरह खडे हो, जैसे आज्ञाकारी दास खडे होते हैं))।

जो व्यक्ति नमाज़ को गफलत और सुस्ती के साथ पढता है तो अल्लाह ने कुर्आन में उस के बारे में बहुत सख्त डाँट में सुनाया है जैसा कि उसका कथन हैः

{فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلاَةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيّاً }مريم٥٩

((फिर उनके पश्चात बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए जिन्हों ने नमाज़ को गँवाया और मन की इच्छाओं के पीछे चले, अतः निकट है कि गुमराही के परिणाम का उन्हें सामना करना पडे))। दूसरी जगह में अल्लाह ने फरमाया : {فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ} الماعون٤/٥ ((अतः तबाही है उन

नमाज पढने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ों से ग़फ़लत बरतते हैं))।

हदीस में हजरते जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः "إن بين الرجل وبين الشرك والكفر ترك الصلاة" ((आदमी के ईमान और कुफर व शिर्क में विभाजक नमाज है))।

हजरते बुरैदह रजिअल्लाहै अनहो की रवायत में है :

"العهد الذي بيننا وبينهم الصلاة فمن تركها فقد كفر"

((भक्त और आवाज़यां में फर्क रखने वाली चीज नमाज़ है, जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने कुफर किया))।

मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढना अनिवार्य है क्योंकि इस का महत्व हदीस में इस प्रकार बयान है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया :

"الصلاة جماعة أفضل من صلاة الفذ بسبع وعشرين درجة "

((जमाअत में नमाज़ पढना अकेले नमाज़ पढने से सत्ताइस श्रेणी ज्यादह है))।

ऐक समय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह इच्छा व्यक्त किया कि उन लोगों के घरों में आग लगा दी जाये जो मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढने के लिये उपस्थित नहीं होते हैं। और नवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः "من سمع النداء فلم يأت فلا صلاة له إلا من عذر " जिस ने अजान सुनने के बावजूद विना किसी कारण के मस्जिद में नमाज न पढा तो उस्की नमाज़ नहीं हुई।

उपरोक्त हदीसों से जमाअत के साथ नमाज पढने का महत्व बिल्कुल स्पष्ट है । नमाज में इतमीनान और इखलास रखना अल्लाह के निकट नमाज़ स्वीकारनीय होने का एक वेश कारण है, जैसा कि कुर्आन में अल्लाह तआला ने फरमायाः {قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ .الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ}المؤمنون١/٢

((निशचय ही सफलता पायी है ईमान लाने वालों ने जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाते हैं)) ।

नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ऐक व्यक्ति को नमाज़ दुहराने का आदेश दिया जिसनें इतमीनान के साथ नमाज़नहीं पढा था ।

इस्लाम में नमाज़ मुसलमानों के बीच संगठित और बराबरी का शिक्षा देती है, ऐक दूसरे में कोई विभाज नहीं है, सब व्यक्ति ऐक ही क़िब्ला की तरफ मुँह करके नमाज़ पढते हैं नमाज में अहले ईमान संतुष्टी पाते हैं और अपनी आंखों में ठन्डक महसूस करते हैं । जैसा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः "وجعلت قرة عيني في الصلاة

((नमाज में मेरी अंखों के लिए ठन्ढक बनाई गई है)) । नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर जब कोई समस्या आता तो आप जलदी से नमाज के लिए जाते क्यों कि अल्लाह ने कुर्आन में फरमाया है : {وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ} البقـرة : ٤٥ ((धैर्य्य और नमाज से मदद लो)) । और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हजरते बिलाल रजियल्लाहो अन्हो को

आदेश देते "يا بلال أرحنا بها" ((हे बिलाल हमें नमाज़ से आराम पहुंचाओ)) क्योंकि नमाज़ में मुसलमान अल्लाह के सामने खडे होते हैं, इस लिये हृदय को आराम मिलता है और आत्मा को सन्तुष्टी मिलती है, और पूरे शरीर अल्लाह के लिये विनम्र होता है।

तीसरा स्तंभ ज़कात

इस को अल्लाह ने धनी मुसलमानों पर अनिवार्य किया है, ज़कात कोई टेक्स, जुर्माना या सरकारी माँग नहीं है बल्कि यह नमाज़ रोज़ह ही की तरह ऐक उपासना है। यह अल्लाह का सामाण्यता हासिल करने का साधन है, इस का पालन करने में या अदा करने में उपकार और घमन्ड का भावना नहीं है, न तो अपने आप को महान समझा जाता है बल्कि इस प्रति विनम्र होना पडता है। ज़कात के हक़दार व्यक्तियों की खोज स्वयं करना पडता है क्योंकि अल्लाह ने धनी पर कृपा किया है इस लिये कि धन दौलत अल्लाह की है मनुष्य की नहीं जैसा कि अल्लाह ने कुर्आन में फरमाया : {وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ} النور:٣٣((और उनको उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है))। ऐक और जगह अल्लाह फरमाते हैं :

{آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُم مُّسْتَخْلَفِينَ فِيهِ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ} الحديد:٧

((ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल पर, और खर्च करो उन चीजों में से जिन पर उसने तुमको खलीफा (प्रतिनिधि) बनाया है। जो लोग तुम में से ईमान लायेंगे

और माल खर्च करेंगे उनके लिए बडा प्रतिदान है)) । इसके महत्व के मद्देनजर हजरते अबु बकर रजियल्लाहो अन्हो ने अरब के उन लोगों के साथ युद्ध किया जो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की देहान्त के पश्चात ज़कात देना बन्द करदिये थे, हजरते अबू बकर ने यह आदेश प्रसतुत किया " والله لأقاتلن من فرق بين الصلاة والزكاة " अल्लाह की क़सम मैं अवश्य उन लोगों से युद्ध करुंगा जो नमाज़ और ज़कात की अनिवार्यता में विभाज करते हैं, अतः सम्पूर्ण सहावा ने अबू बकर के इस वीचार को उचित ठहराते हुए इस युद्ध का समर्थन किये । अल्लाह ने कुर्आान में उन लोगों के लिये अपने अजाब की चुनौती दीया है जो अपने धन माल की ज़कात नहीं नीकालते, जैसा कि अल्लाह ने फरमाया :

{وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلاَ يُنفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ} التوبة:٣٤

((दुखदायिनी यातना का सुसमाचार दो उनको जो सोने और चाँदी एकत्र करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते)) । वर्ष में एक वार मुसलमानों के धन में जकात अनिवार्य है, खेती अथवा बागैचे का साल उस समय माना गया है जब फसल पक जाय, जिन लोगों को ज़कात दिया जाये वह आठ प्रकार के हैं, जिन का वयान कुर्आान में इस तरह है । अल्लाह तआला ने फरमाया :

{إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاء وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللّهِ }التوبة:٦٠

((ये सदके तो वास्तव में ग़रीबों और मुहताजों के लिये है और उन लोगों के लिये जो सदकों के काम पर नियुक्त हों, और उन के लिये निके दिलों को परचाना अभीष्ट हो और यह गरदनों को छुड़ाने और ऋणियों की सहायता करने में और अल्लाह के मार्ग में, और मुसाफिरों पर दया दर्शाने में प्रयोग करने के लिये है, यह एक अनिवार्य पालनीय आदेश है))।

चौथा स्तंभ रमजान के रोजे

इस बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया:

{يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ}البقرة١٨٣

((हे ईमान वालो, तुम्हारे लिएये व्रत (रोजे) अनिवार्य कर दिये गये जिस प्रकार तुम से पहले नबियों के अनुयायिओं के अनिवार्य किये गए थे। इससे आशा है कि तुम में धर्म परायणता का गुण पैदा होगा))। रोजा रखने वाले व्यक्ति रोजे के स्थिति में जायज़ चीजों के प्रयोग से भी बचते हैं रोजे में स्वस्थिय फायदे के एलावह आत्मिये फायदे भी हैं, रोजा रखने वाले व्यक्ति गरीब गुरबा की स्थिति याद करते हैं, वह लोग किस प्रकार के दुख तकलीफ में अपना जीवन व्यतित कर रहे हैं जैसा कि अफरीका अधिकांश क्षेत्र में रहने वाले लोग।

दूसरे महीना के विपरित रमजान का महीना बहुत उत्तम है, क्योंकि इसी महीना में कुर्आन अवतरण हुआ जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया :

{شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيَ أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ }البقرة١٨٥

((रमज़ान वह महीना है जिस में कुरआन उतारा गया जो मानवों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है, जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अन्तर खोल कर रख देने वाली है)) । रमजान महीना में ऐक ऐसी रात पाई जाती है जो हजार महीनों से उत्तम है जैसा कि अल्लाह ने फरमायाः

{إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ . وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ . لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ }القدر:١/٢/٣

((हम ने इस (कुरआन) को क़द्र की रात में अवतरण किया है और तुम किया जानों कि क़द्र की रात किया है? क़द्र की रात हज़ार महीनों से अधिक अच्छी है)) ।

सिष्टाचार, आदर, अल्लाह के साथ प्रेम और संयमी हृदय से रोज़ा रखने में एक साल पहिले के पाप अल्लाह तआला क्षमा करदेता है । जैसा कि हजरते अबू हुरैरह रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया :

" من صام رمضان إيمانا واحتسابا غفر له ما تقدم من ذنبه ، ومن قام ليلة القدر إيمانا واحتسابا غفر له ما تقدم من ذنبه"

((जिसने ईमान तथा नेकी के आशा के साथ रमजान का वर्त रख्खा उसका पिछले एक साल का पाप अल्लाह

क्षमा कर देता है, जिसने ईमान और नेकी के आशा के साथ रमजान में उपासना किया तो अल्लाह उसके पिछले एक साल के पाप को क्षमा कर देता है, जिस ने ईमान और नेकी के आशा के साथ कदर वाली रात में अल्लाह के उपासना में जागरण किया तो अल्लाह तआला उसके पिछले एक साल के पाप को क्षमा करदेता है))।

राजे की हालत में खान पीन के एलावह हर एक अवैध चीजों और बातों से बचना अनिवार्य है, चुगली, अदखोही बदखोही झूठ तथा गाना वगैरह से बचना भी अनिवार्य है, वलकि रोजह की हालत में कुर्आन का पाठ अल्लाह का जिक्र सदका, और ज्यादह से ज्यादह अल्लाह के उपासना करना सुन्नत है।

पांचवा स्तंभ हज

अल्लाह ने फरमायाः {وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلاً} ((लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जिस को इस घर तक पहुंचने की सामर्थ्य प्राप्त हो वह इस का हज करे))। जीवन में एक बार हज करना अनिवार्य है इसी तरह उमरा भी। बालिग, सामर्थ्यवान, बुद्धिमान , आज़ाद, मुसलमानों पर अनिवार्य है, यदि बच्चों ने हज और उमरा किया तो सही हो जाता है, किन्तु अनिवार्यता खत्म नहीं होता, बालिग होने पर यदि उसे सामर्थ्य प्राप्त होता है तो फिर हज करैं, महिला वर्ग बिना मोहरिम के हज नहीं करैंगी क्योंकि नबी

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मना किया है कि कोई महिला बिना मोहरिम किसी प्रकार का यात्रा करैं।

हज के माध्यम से विशव के सम्पूर्ण मुसलामन एक जगह में एकत्र होते हैं एक ही प्रकार के कपडे पहनते हैं एक ही भूमी में उपासना करते है, छोटे बडे धनी निर्धन काले गोरे लोगों में कोई विभाज नहीं है, सब बराबर हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः

{يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَى وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوباً وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ} الحجرات:١٣

((लोगो, हमने तुम को एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और फिर तुम्हारी जातियाँ और बिरादरियाँ बना दीं ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो))।

हज्जे मबरुर का बदला स्वर्ग है, जैसा की बुखारी तथा मुस्लिम शरीफ में हजरते अबू हुरैरह रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

" العمرة إلى العمرة كفارة لما بينهما والحج المبرور ليس له جزاء إلا الجنة"

((एक उमरह दूसरे उमरह तक होने वाले पाप के लिए प्रस्चीत है, और हज्जे मबरुर का बदला स्वर्ग ही है))।

दूसरी ऐक और हदीस में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः "من حج لله فلم يرفث و لم يفسق رجع كيوم ولدته أمه "

((जिसने हज किया अत : उसने अपनी पत्नी केसाथ संभोग नहीं किया और न किसी को गाली दिया तो वह

आदमी हज के बाद ऐसा होजाता है जैसे कि आज ही उसका जन्म हुआ हो))।

इस्लाम के पांच स्तंभों के एलावह अन्य महत्वपूर्ण और कार्य भी हैं जो सम्पूर्ण मुसलमानों के लिये अनिवार्य है, जैसे भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना। इसी वजह से अल्लाह तआला ने मुस्लिम समुदाय को उत्तम समुदाय बताया है, कुर्आन में शुभ कथन हैः

{كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ} آل عمران: ١١٠

((अब संसार में वह उत्तम गरोह तुम हो जिसे मानवों के मार्गदर्शन और सुधार के लिये मैदान में लाया गया है। तुम नेकी का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान रखते हो))।

किसी इस्लामी विद्धवान ने कहा है कि भलाई का आदेश देने और बराई से रोकने वाला व्यक्ति सब से उत्तम है। इस्लाम में जहाद का भी बड़ा महत्व है, क्योंकि इसमें मुसलमानों की प्रतिष्ठा और और अल्लाह के आदेश की बुलन्दी होती है और इस्लामी क्षेत्र दुशमनों के आक्रमण से सुरक्षित रहते हैं, हदीस में इसके महत्व के बारे में इब्ने उमर रजिअल्लाहो अन्होमा से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया :

"أمرت أن أقاتل الناس حتى يشهدوا أن لا إله إلا الله وأن محمدا رسول الله ويقيموا الصلاة ويؤتوا الزكاة فإذا فعلوا ذلك عصموا مني دماءهم و أموالهم إلا بحق الإسلام وحسابهم على الله".

((अल्लाह ने मुझे आदेश दिया है कि लोगों के साथ उस समय तक युद्ध रख्खुं जब तक की इस बात की गवाही ना दे दें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूजनिय नहीं है, और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के उपदेशक हैं, नमाज़ पढैं, ज़कात दें. जब इन कामों में आधारित हो जाये तो उन के साथ युद्ध करना हराम है))।
और मुस्नद इमाम अहमद, और त्रिमिज़ी शरीफ में सहीह सनद के साथ हजरते मोआज बिन जबल रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः ((رأس الأمر الإسلام وعموده الصلاة وذروة سنامه الجهاد في سبيل الله))

((मामले की चोटी इस्लाम है, और उस का खम्भा नमाज़ है, और उस की सर बलन्दी अल्लाह के मार्ग में जेहाद है))।
हजरते अवू बकर रजिअल्लाहो अन्हो जब मुसलमानों के खलीफा हुए तो अपने पहले भाशण में फरमाया कि

" لا يدع قوم الجهاد في سبيل الله إلا ضربهم الله بالذل "

अल्लाह के मार्ग में जब मुसलमान जिहाद करना छोड दैंगे तो अल्लाह तआला उन्हें जलील कर देंगे।

जिहाद का उद्देशय नियाय क़ायम करना और अत्याचारी खत्म करना तथा अल्लाह के सिद्धान्त को लागू करना, और इस्लामी क्षत्रों को दुशमनों के आकरमण से बचाने के लिए ही है।

इस्लाम धर्म प्राकृतिक धर्म है नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले के संदेष्टाओं नें भी अपने समुदाय को इस्लाम का आमंत्रण दिये । जैसा कि कुर्आन में अल्लाह तआला ने एक महान संदेष्टा श्रीमान इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाया हैः

{وَمَن يَرْغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلاَّ مَن سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ * إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ * وَوَصَّى بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمُ الدِّينَ فَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ} البقرة : ١٣٠ /١٣١/ ١٣٢

((अब कौन है जो इब्राहीम के तरीक़े से नफरत करे ? जिसने स्वयं अपने-आपको मूर्खता आज्ञान में ग्रस्त कर लिया हो उसके सिवा कौन यह कर्म कर सकता है ? इब्राहीम तो वह व्यक्ति है जिसको हमने संसार में अपने कार्य के लिये चुन लिया था और परलोक में उसकी गणना अच्छों में होगी । उसका हाल यह था कि जब उसके प्रभु नें उससे कहा : "मुस्लिम हो जा " तो उसने तुरन्त कहा : मैं जगत के स्वामी का "मुस्लिम" हो गया इसी तरीक़े पर चलने की ताकीद उसने अपनी औलाद को की थी और इसी की वसीयत याक़ूब अपनी सन्तान को कर गया था । उसने कहा था कि मेरे बच्चो, अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म पसन्द किया है । अतः मरते समय तक मुस्लिम ही रहना)) । जैसा कि अल्लाह सुबहानहु व तआला फरमाते हैं :

{الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءهُمْ } البقرة ١٤٦

((जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इस स्थान को (जिसे उपासना-दिशा निर्धारित किया गया है) ऐसे पहचानते हैं, जैसे अपनी सन्तान को पहचानते हैं)) |

और सहीह मुस्लिम में हजरते अबू हुरैरह रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

" والذي نفس محمد بيده لا يسمع بي أحد من هذه الأمـــة يهودي ولا نصراني ثم يموت و لم يـــؤمن بالذي أرسلت به إلا كان من أصحاب النار "

((मुहम्दद की जान जिसके हाथ में है उसकी क़सम इस समुदाय के यहूदी तथा क्रिश्चियन को मेरा उपदेश पहुँचा और मेरे उपर ईमान लाये बिना उसकी मृत्यु होजाये तो निसंदेह वह व्यक्ति नर्कवास होगा)) | अल्लाह तआला ने कुर्आन में फरमाया :

{وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطاً لِّتَكُونُواْ شُهَدَاء عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيداً }البقرة١٤٣

((और इसी तरह तो हमने तुम मुसलमानों को एक उत्तम समुदाय बनाया है ताकि तुम दुनिया के लोगों पर गवाह रहो और रसूल तुम पर गवाह हों)) | अल्लाह तआला ने फरमायाः {يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لاَ تَغْلُواْ فِي دِينِكُمْ وَلاَ تَقُولُواْ عَلَى اللّهِ إِلاَّ الْحَقَّ}النساء١٧١

((हे किताब वालो, अपने धर्म में अत्युक्ति से काम न लो और अल्लाह से लगाकर सत्य के अतिरिक्त कोई वात न कहो)) |

और वुखारी शरीफ में हजरते उमर रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

और बुखारी शरीफ में हजरते उमर रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

"لا تطروني كما أطرت النصارى ابن مريم إنما أنا عبد فقولوا عبد الله و رسوله "

((मेरे बारेमा अत्युक्ति न करो जैसा कि कि ईसाईयों ने ईसा मसीह के बारेमे अत्युक्ति किया)) ।

और हजरते इब्ने अब्बास रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

" إياكم والغلو في الدين فإنما أهلك من كان قبلكم الغلو في الدين "

((धर्म संबन्ध अतिशयुक्ति करने से बचो क्युँकि तुम से पहले के समुदायें धर्म में अतिशयुक्ति करने के कारण से नष्ट हो गये)) ।

जैसा कि सहीह मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रजियल्लाहो अन्होमा से रवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

" ما بعث الله من نبي إلا كان حقا عليه أن يدل أمته على خير ما يعلمه لهم وينذرهم شر ما يعلمه لهم "

((अल्लाह ने जिस उपदेशको भी संसार मे भेजा प्रत्येक उपदेशक ने अपने समुदाय को सुकर्म के बारेमे वता दिया और सभी दुशकर्म के बारेमे भी वता दिया)) ।

और मुस्नद इमाम अहमद में सहीह सनद के साथ हजरते अबू हुरैरह रजियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि नवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमायाः "إنما بعثت لأتمم صالح الأخلاق

((अल्लाह ने मुझे उत्तम व्यवहारों को परिपूर्ण करने के लिये भेजा)) | " إنما بعثت لأتمم مكـارم الأخـلاق " ((अल्लाह ने मुझे सभी उत्तम व्यवहारों को पूर्ण करने के लिये भेजा है)) अल्लाह तआला ने फरमायाः

{وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلاً مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحاً وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ} فصلت: ٣٣

((और उस व्यक्ति की वात से अच्छी वात और किसकी होगी जिसने अल्लाह की ओर वुलाया और अच्छा कर्म किया और कहा कि मैं मुसलमान हूँ)) |

वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व वरकातुहु